<u>हिला हुआ आदमी</u>

रचनाकार:- सुशांत सुप्रिय

गतिविधि:-

दिनभर की घटी घटनाओं को आप किसे बताते हैं? क्या आपको लगता है कि ऐसा करने से मन हल्का हो जाता है? अगर आप कोई बात किसी को भी न बता पाए तो क्या होगा? (Check list)

इस गतिविधि के संपूर्ण ब्यौरे को पढ़ें.....

प्रस्तावना:-

बच्चो, हमारे मन में उभर रहें विचारों को तथा हमारे साथ घटी घटनाओं को व्यक्त करना बहुत जरूरी होता है | अगर यह विचार हमारे मन में ही रह जाते हैं तो इनके परिणाम अच्छे नहीं होते हैं|

सोचिए तो, आपका किसी से झगड़ा हो गया... आपको बड़ा गुस्सा आया तो आप क्या करते हो? आप...

- ✓ अपनी माँ या पिताजी को बताते हैं...
- ✓ अपने किसी दोस्त को बताते हैं
- ✓ या .. उस व्यक्ति को ही पीट देते हैं

अर्थात आप किसी तरीके से अपनी भावनाओं को व्यक्त करने की कोशिश करते हैं | लेकिन हमेशा तो यह मुमकिन नहीं है कि लोग हमारी बाते समझें...

रहीम जी कहते हैं:-

रहिमन निज मन की व्यथा मन ही राखो गोह।
सुनि अठलैहैं लोग सब बाटि न लैहें कोह।।

हमें अपने मन की व्यथा हमारे दुःख अपने ही मनमें रखनी चाहिए क्योंकि लोग हमारे दुखों को सुनते हो हैं पर उनकी हँसी भी उड़ाते हैं |

ऐसी परिस्थिति में हमें क्या करना चाहिए....

तब हमें ऐसा मित्र ढूँढना चाहिए जो हम पर ना हँसे... हमारी बात ध्यान से सुने और वक्त आने पर हमारी समस्या सुलझाने में हमारी मदद भी करे....

क्या आपको लगता है कि ऐसा मित्र मिल सकता है?

हाँ..... और यह मित्र बन सकती है ..... "डायरी"

हम अपनी डायरी में दिन-भर की घटी घटनाओं के कारण हमारे मन में उभरे विचारों को बेजिझक लिख सकते हैं... डायरी में हम अपनी भावनाओं को विचारों को लिख सकते हैं |

बच्चों डायरी काफी व्यक्तिगत होती है.. तुम्हारे अलावा या तुम्हारी इजाज़त के बिना आपकी डायरी कोई नहीं पढ़ सकता....

आत्म कथा (डायरी) लेखन एक सच्चे मित्र की तरह है, जो गलत काम करने

पर "आत्मग्लानि"(खुद को डांटना) रूपी दण्ड तथा अच्छा काम करने पर "आत्म सम्मान"(खुद

की तारीफ़ करना)रूपी पुरस्कार देती है, साथ ही शुभ संकल्पों(अच्छे कार्य) के पूरा न कर पाने

पर "विकल्प" भी उपलब्ध कराती है, यदि हम अपना अवलोकन सच्चे मन से करते हैं।

बच्चों, जो पाठ हम आज पढ़नेवाले हैं, वह पाठ भी "डायरी लेखन" की पध्दति से लिखा गया है |

यह पाठ डायरी लेखन का उदाहरण है |

पाठ शुरू करने से पहले, चलिए, डायरी लेखन की विधा के बारे में जान लें.....

डायरी लेखन :-

- डायरी लेखन का स्वरूप छोटे निबन्ध की तरह ही होता है, जिसमें लेखक अपनी भावनाओं को. विचारों को तथा दिनभर की घटी घटनाओं को लिखता है |

- डायरी लेखन एक प्रकार का आत्म-परिक्षण ही होता है, जिसमें घटनाओं के वर्णन की अपेक्षा उन घटनाओं के कारण लेखक के मन में उभरे विचारों को और प्रतिक्रियाओं को लिखा जाता है |
- डायरी-लेखन बहुत व्यक्तिगत होता है |
- डायरी-लेखन के फायदे इस प्रकार से हैं:-

1. हम अपनी भावनाएँ जैसे आनन्द, दुःख, गुस्सा, उत्साह आदि सभी को प्रकट कर सकते हैं |
2. अपने विचारों को, दृष्टिकोण को बिना डरें प्रस्तुत कर सकते हैं |
3. हम अपने सपनों को लिख सकते हैं |
4. घटनाओं को अच्छी तरह से जान सकते हैं |

चलिए,इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर हम आज का पाठ पढ़तें हैं...

“हिला हुआ आदमी”...यह पाठ सुशांत सुप्रिय द्वारा लिखा गया है |

पाठ का आरंभ :-

१.

पाठ के आरंभ में लेखक अपने एक मित्र सुधाकर के बारे में हमें बताते हैं जो अत्याधिक संवेदनशील है | संवेदनशील होने के साथ-साथ सुधाकर आदर्शवादी विचारों का व्यक्ति भी है.... .....इसी करण से समाज में घटने वाली घटनाएँ उसके मन पर गहरी छाप छोड़ जाती हैं | इन्हीं घटनाओं की प्रतिक्रिया के रूप में वह अपनी डायरी में लिखता है |

सामान्य रूप से इन प्रतिक्रियाओं को पढ़कर लिखने वाला क्या कहना चाहता है किसी को भी समझ आना असंभव हैं....क्योंकि सुधाकर ने यह सारी बातें “अन्योक्ति” के माध्यम से लिखी हैं |

अन्योक्ति का अर्थ होता है “किसी अप्रयत्क्ष(जो नहीं है)वस्तु या घटना का आधार लेकर प्रत्यक्ष घटना या वस्तु का वर्णन करना|”

मराठी में इसे “लेकी बोले सुने लागे ” कहते हैं..... लेकिन ऐसा लिखते समय यहाँ लेखक ने व्यंग्य का आश्रय नहीं लिया है | लेखक का लेखन तीव्र बाणों की तरह है, जो पढने वाले के मन पर आघात करते हैं |

सुधाकर लेखक को अपनी डायरी इसलिए पढने देता है क्योंकि सुधाकर को लगता है कि लेखक उनकी बात समझ पाएगा |

इसी कारण वह डायरी देते समय कहता है, “तुझे नहीं, अपने लेखक मित्र को दे रहा हूँ | ”

सुधाकर को विश्वास है कि डायरी में लिखी अन्योक्ति की बातें लेखक औरों से अधिक अच्छी तरीके से समझ पाएगा |

२.

चोर सुधाकर के घर में चोरी करने के इरादे से आते हैं, पर उन्हें कुछ नहीं मिलता है | यहाँ तक की उसके पास सपने भी नहीं हैं |

इस अन्योक्ति का इस्तमाल गरीबों के रोजमर्रा के जीवन को दिखाने के लिए किया गया है |

हमारे समाज में गरीब व्यक्ति अधिकाधिक गरीब होता जा रहा है | बढती महँगाई, बेरोजगारी जैसी समस्याओं से झूँझता सामान्य व्यक्ति बड़ी मुश्किल से अपनी जरूरतों को पूरा कर पाता है| सुबह से लेकर शाम तक सिर्फ पेट की चिंता में फँसे इस गरीब आदमी की आँखों में सपने कहाँ से होंगे?

अतः चोरों को उसके घर में कुछ नहीं मिलता है | यहाँ तक की सपने भी नहीं|

रोटी,कपड़ा,मकान इन जरूरतों के पीछे लगे आदमी की आँखों में ना सपने होते हैं और ना ही तिज़ोरी में पैसा उसके लिए तो मात्र “जीने की रस्म जारी है.....”

३.

अविश्वास से भरे माहौल का वर्णन करते हुए सुधाकर कहता है.....

अविश्वास ने दुनिया में गहरा अँधेरा भर दिया है | भले ही सूरज क्यों न उगे .....

सूरज भी इस अँधेरे को दूर नहीं कर सकता है ... दिन का उजाला भी इस अँधेरे के कारण मिट गया है |

एक फोडे की तरह उग आए इस अविश्वास से भरे माहौल को सहन करना मुश्किल है | चारों ओर सभी दिशाओं में सिर्फ इसी अविश्वास का अँधेरा छाया है |

यहाँ पर सुधाकर मानवी बस्तियों की तुलना जंगल से करता है .... जंगला की तरह यहाँ पर भी नरभक्षी भेड़िए घूम रहे हैं | जंगल में घूमने वाले नरभक्षी भेड़िए तो सामने से वार करते हैं और अपना भक्ष्य बनाते हैं|

परन्तु मानव के खाल में रहने वाले भेड़ियों का अपना खुद का एक भयानक तरीका है..... वे मुस्कराकर आपसे हाथ मिलाते हैं..

“पीठ थपथपाकर आपको रीढ़हीन बनाते हैं.....” आम तौर पर प्रशंसा करने के लिए पीठ थपथपाई जातीहै | पर ये भेड़िया हमारी प्रशंसा करते तो हैं पर इसके साथ हमारा आत्मसम्मान भी छीन लेते हैं | हम उनके दोस्ती के और मेहरबानियों के इतने कायल हो जाते हैं कि उन्हें खुश करने के लिए हम कुछ भी कर सकते हैं | फिर ये भेड़िया हमें सच्चे हमदर्द लगने लगते हैं, हम उनपर अपने-आप से भी अधिक भरोसा करने लगते हैं | हम उनकी कही हर बात पर आँखें मूँदकर भरोसा करने लगते हैं|

लेकिन जब इन भेडियों के स्वार्थ की बात आती है तब वे हमारा विश्वास तोड़ने से भी नहीं कतराते हैं |

उस दिन ये अपने खाल से बाहर निकलकर अपनी औकात पर आते हैं..... और तब हमें इस बात का पछतावा होता है कि हमने ऐसे लोगों पर भरोसा क्यों किया |

पर ये स्वार्थी जीव भेड़िए की तरह न सिर्फ स्वार्थी होते है अपितु ये कायर भी होते हैं | इन लोगों के लिए विश्वासघात करना आम बात होती है |

शायद लेखक को कोई ऐसा अनुभव आया होगा जहाँ किसी व्यक्ति ने ना सिर्फ़ लेखक का अपितु अनेक लोगों का भरोसा तोड़ा होगा | उसके साथ ही उस व्यक्ति का काम भी स्वार्थपूर्ण तथा समाज के लिए विघातक रहा होगा |

४.

दुनिया में फैली हिंसा, सत्तान्धता और बर्बरता की ओर इशारा करते हुए सुधाकर कहता है कि इस दुनिया का रंग ही मानो लाल हो गया है | आँखों से खून टपक रहा है | आकाश से भी मानो खून टपक रहा है... जिससे सारी धरती लाल हो गई है | सब लोग लहूलुहान नजर आ रहे हैं |

सुधाकर ने यहाँ लाल रंग को हिंसा के साथ जोड़ा है... क्योंकि हिंसा का ज़ोर बढ़ रहा है इसी कारण से सारी धरती इसके परिणाम भुगत रही है |

लोग संयम से जीना भूल गए हैं.... मानव अपने स्वार्थ के लिए मानवता से दूर होकर पशुओं जैसा बर्ताव करने लगा है.... सत्ता में अंध मानव ने अपने अंदर की इंसानियत का गला घोंट दिया है और अपने हाथों से ही उसकी चिता जलाई भी है ..... संवेदनाहीन मानवों को इस धुँए से शायद कोई फर्क नहीं पड़ता हो पर संवेदनशील लोगों के मन में इंसानियत की चिता का धुँआ भर गया है |

शहरों पर अब सिर्फ नरभक्ष भेड़ियों का राज है | अर्थात बलशाली और हृदयहीन लोगों के हाथ में समाज का भविष्य है |जिनकी आँखें भी खून ही उगलती हैं... अर्थात जिनके मन में दया नहीं मानवता नहीं है | जो लोगों को प्यार से नहीं अपितु डराकर अपने वश में रखना चाहते हैं |

सारे सुंदर-सुंदर रंग गुस्से से भरे लाल रंग में बदल गए हैं |

सारी दुनिया में लोग सिर्फ मारे जा रहे हैं..... इसका परिणाम इस हद तक हो गया है कि सुधाकर कहता है कि उसके जीवन में अभी एक भी रंग बाकी नहीं है, सिर्फ लाल रंग है |

यहाँ पर सुधाकर का दुनिया भर में हो रहीं हिंसा की घटनाओं की ओर इशारा है | अपनी सत्ता को बनाए रखने के लिए कुछ सत्ता में अंधे लोग सामान्य लोगों का खून बहा रहे हैं | और अपनी आकांक्षा को पूरा करने के लिए सारी दुनिया को युध्द की कगार पर लेकर आएँ हैं |

शायद सुधाकर इसी बात से व्यथित है |

५.

मानव को सृष्टि का सबसे बुध्दिमान प्राणी माना गया है | शायद इसलिए उसने अपन स्वार्थ के लिए सभी को नचाना शुरू कर दिया | अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए उसने प्रकृति का ह्रास(खत्म) करना शुरू किया | उसकी इसी करतूतों से तंग आकर अब प्रकृति खुद का रौद्र रूप दिखाना शुरू किया |

इसी बात की ओर संकेत करते हुए सुधाकर ने अपनी डायरी में लिखा है कि वह दिन दूर नहीं जब पेड़-पौधे भी मानव के स्वार्थी बर्ताव से तंग आकर उसे "एहसान फ़रामोश " कहेंगे ..... वह जो किसी के एहसानों को नहीं मानता|

हमारी संस्कृति में हमेशा से ही पेड़-पौधों का उदाहरण "निःस्वार्थी मनोवृत्ति " के लिए दिया जाता है | सोचिए तो अगर यही हम मानवों को स्वार्थी कहने लगे तो .....

क्या आपको नहीं लगता कि यह समय आत्मपरीक्षण का है? अपनी करतूतों के बारे में एक बार सोचने का है |

६.

अगले अनुच्छेद में सुधाकर ने जाति-व्यवस्था की ओर अन्योक्ति के माध्यम से इशारा किया है | इस परिस्थिति का वर्णन करते समय सुधाकर ने अतिश्योक्ति का भी आधार लिया है | वह कहता है कि आजकल खटमल या मच्छर भी काटने से पहले धर्म पूछते हैं, हवा आंगन में बहने से पहले जाति पूछती है, धूप घर के दालान में आने से पहले उसकी नस्ल जानना चाहती है |

वास्तव में इन सारे उदाहरणों से सुधाकर यह बताना चाहता है कि प्रकृति कभी अपनी संपदा लुटाते समय कभी भी धर्म, जाति या नस्ल के बारे में नहीं सोचती| यह छोटे विचार हम मानवों के ही है |

लेकिन कुछ दिनों के बाद ऐसा भी हो सकता है कि ये विचार हमारे खून में इतने समाँ जाएँगें और हमारा स्वभाव भी ऐसा बन जाएगा है, तब प्रकृति भी यह विचार करने लगेगी कि शायद इसी प्रकार ही बर्ताव किया जाता है..... प्रकृति का सबसे बुध्दिमान प्राणी "मानव" भी तो इसी प्रकार जीता है | सुधाकर यहाँ भविष्यकाल के बारे में हमें आगाह करना चाहता है |

सुधाकर शायद यह कहना चाहता है कि मानव अपनी गलतियों को सुधार ले... जब सबसे संपन्न प्रकृति कभी अपनी संपदा लुटाते समय इस प्रकार सोचती नहीं है तो क्या तुम्हें कोई अधिकार है इतनी छोटी सोच रखने का?

७.

आज के समाज के बारे में बात करते हुए सुधाकर कहता है कि आज हमारे आस-पास लोग स्वयं को पहचानने की अपेक्षा दूसरों की ओर ज्यादा ध्यान देने लगे हैं | उनकी आँखों पर पडदा पड़ा है, और उनकी सोचने समझने की शक्ति खत्म हो चुकी है | इसी कारण वे असलियत देखते नहीं है, बुराई की आवाज सुन नहीं सकते हैं | अपने हाथ-पैरों का इस्तमाल अच्छे कामों की अपेक्षा मार-पीट में ज्यादा कर रहें हैं |

आज की दुनिया में प्रगति करना गुन्हा हो गया है | लोग अपनी काबिलियत(शक्ति) को पहचाने बिना ही यश पाना चाहते हैं | किसी प्रकार से यश प्राप्त करने की इच्छा ने मानवों को गलत काम करने पर मजबूर कर दिया है | चूंकि सभी को ही आगे जाने की जल्दी है इसलिए इन गलत कामों के लिए किसी को रोका भी नहीं जा रहा है | लोग बेईमानी कर रहें हैं,गलत काम कर रहें हैं पर उन्हें रोकने वाला कोई नहीं है | “हमें क्या करना है” इस विचार से कोई कुछ भी नहीं कर रहा है |

हर वस्तु का तथा उस वस्तु के स्थान का अपना एक महत्व होता है | सोचो, अगर नींव के पत्थर ने कलश बनाने की इच्छा की तो क्या होगा .....

पर आज की दुनिया में हर व्यक्ति को अपने स्थान से अधिक दूसरों के स्थान में रूचि निर्माण होने लगी है | इसी कारण “फुटनोट” शीर्षक बनाना चाहती है | यह उदाहरण देकर सुधाकर यह बताने की कोशिश कर रहा है कि लोग अब अपने-आप से अपनी स्थिति से संतुष्ट नहीं हैं..... और ना ही किसी और को संतुष्ट होने दे रहे हैं |

इसी कारण सुधाकर कहता है कि “लोग दूसरों के चेहरों में अपनी शक्ल के लिए आईना ढूँढ़ते फिर रहें हैं|”

असंतोष आज एक युग का स्वभाव बन गया है |

८.

जहां लोगों का स्वभाव, उनका चरित्र बदल रहा है वहाँ भाषा किस प्रकार छूट पाएगी ?

भाषा का दुरूपयोग इस हद तक बढ़ गया है कि मुमकिन है कि भाषा एक दिन हमें छोड़ कर चली जाए.....

हम अपनी हरकतों से बाज़ नहीं रहे हैं.... अपने स्वार्थ के लिए हम सभी को इस्तमाल कर रहे हैं, भाषा भी इससे बच नहीं पाई है | इअसी भाषा का इस्तमाल करते हुए हम लोगों को ठग रहें हैं,उन्हें भाला-बुरा कह रहे हैं | अपने गलत इस्तमाल को भाषा और कितना शं कर पाएगी ....?

९.

पाठ के अंतिम अनुच्छेद तक आते –आते सुधाकर की लिखी हर एक बात की सत्यता का एहसास हमें भी होने लगता है |

सुधाकर ने आज के समाज का वर्णन करते समय “बदबू” की संकल्पना का उपयोग अत्याधिक किया है |

क्या आप बता सकते हैं ऐसा क्यों?

सोचिए तो बदबू कब आती है .....

जब भी कोई चीज सड़ने लगती है तब बदबू आती है |

इस अनुच्छेद द्वारा सुधाकर इसी बात की ओर संकेत करना चाहता है कि अज्ज के समाज में नीति-मूल्यों का, आदर्शों का प्रेम-सद्भावना जैसी भावनाएँ खत्म हो रही हैं | इन बातों का उपयोग अब कोई नहीं करता इसीलिए वे निष्क्रिय भी हो गईं है .....और धीर-धीरे सड़ने भी लगीं हैं | उसी सडन की बदबू चारों ओर फैली है |

इंसानियत के सड़ने की बदबू में शैतानी ताकदों की शैतानियत की दुर्गन्ध भी मिली हुई है| सोचिए तो..... कितना भयंकर वातावरण है हमारे चारों ओर....

सुधाकर यहाँ यह भी बताता है कि यह दुर्गन्ध कहाँ-कहाँ से आ रही है ..

- टुच्ची राजनीति करने वाले अवसरवादी नेता
- मिलावट करने वाले दुकानदार

- लालची इंजीनियर-डाक्टर
- मुखौटे लगाए घूम रहा मध्यवर्ग
- बदनियती की गंध
- मक्कारी और जालसाज़ी की गंध

इतना ही नहीं इस दुर्गन्ध की खासियत भी वह हमें बता रहा है ...

- इस गंध को कितना भी धकेलो उँगलियों से चिपक जाती है
- इसे सूँघना नरकीय यातना है

१०. समारोप

यह पाठ समाज का एक ऐसा चित्र हमारे सामने प्रस्तुत करता है जो काफी "नाकारात्मक" है |

इस पाठ में अपनी बात को स्पष्ट करे के लिए लेखक ने बातों को बढ़ा-चढाकर कहा है | पाठ पढ़ते समय कई बार तो हमें ऐसा भी लगता है कि क्या सचमुच हमारा समाज इतना भयानक है?

शायद हाँ.... लेकिन क्या यह वर्णन "कुछ ज्यादा " तो नहीं है?

इसका कारण है हमारा "सुधाकर " .....

सुधाकर एक संवेदनशील व्यक्ति है जो छोटी-से-छोटी घटनाओं के बारे में उनके परिणामों के बारे में गंभीरतापूर्वक सोचता है ..... भविष्य में घटने वाले उन परिणामों के विचार मात्र से ही वह काँप उठता है...और अपने संवेदनक्षम मन में उन परिणामों की छवि बना लेता है...

इसी कारण लेखक ने उसे दोनों प्रकार से "हिला " हुआ कहा है....

क्योंकि उसकी खासियत है....

1. किसी भी घटना के बारे में सीमाहीन सोचना
2. परिणामों से सिहर उठना
3. एक ऐसी मानसिकता को दिखाना जिसके बारे में आम आदमी सोच भी नहीं सकता

इसी कारण सही मायनों में “सुधाकर” “हिला हुआ आदमी” है |

उद्देश्य.

इस पाठ को पढने पर उसके कुछ उद्देश्य उभरकर सामने आते हैं:-

- बच्चों अब आप जिस उम्र हैं अप को समाज की परिस्थिति के बारे में सजग बनाना जरूरी है... इस पाठ के माध्यम से आप का समाज में व्याप्त बुराइयों को देखने का नज़रिया बदलना जरूरी है ... उनके परिणामों की ओर आपका ध्यान आकृष्ट करना आवश्यक है.... इसीलिए यह पाठ लिखा गया है |
- बच्चो, भाषा की दृष्टि से भी इस पाठ की अपनी खासियत है------
- क्या आपको नहीं लगता भाषा सीमाहीन होती है.. लेखक ने यहाँ पर ऐस- ऐसे उदाहरणों का उपयोग किया है, जिनका आमतौर पर अर्थ कुछ अलग है | अन्योक्ति का उपयोग भी किया गया है |
- इस पाठ द्वारा आपको भी डायरी लिखने के प्रोत्साहित करना एक उद्देश्य है | डायरी लेखन का अपना महत्व होता है, वह ना सिर्फ अपनी भावनाओं के प्रगटीकरण के लिए उपयोगी होता है अपितु यह इतिहास का लेखा-जोखा भी बन सकता है | क्या आप इस प्रकार के डायरी के बारे में जानना चाहते हैं,जो इतिहास का आधार बन गई ?

पुष्टि -धन.

द्वितीय विश्व-युध्द के समय यहूदियों पर जो अत्याचार हुए उसके बारे दुनिया को बताने वाली “एक डायरी ” थी| यह डायरी एक छोटी सी बच्ची द्वारा लिखी गई थी | इस बच्ची का नाम था “ॲन फ्रँक”..... या आपको इस संबंध में अधिक जानकारी दी जा रही है .....

(To insert the ppt regarding this only first three slides)

मूल्याकंन.

१. सुधाकर ने लेखक को डायरी क्यों दी?

अ. लेखक सुधाकर का अच्छा दोस्त था

आ. लेखक डायरी छपवाने में सुधाकर की मदद करने वाला था

इ. लेखक सुधाकर की बात समझ सकता था

ई. लेखक सुधाकर की गलतियाँ निकालने वाला था

२. इंसानी जंगल की सड़कों पर कौन घूम रहें हैं?

अ. शेर

आ. चीता

इ. हाथी

ई. नरभक्षक भेड़िए

३. सारे खिलखिलाते रंग किस रगज में बदल गए हैं?

अ. सफ़ेद रंग में

आ. गुस्सैल लाल रंग में

इ. काले रंग में

ई. गुलाबी रंग में

४. लोगों में असंतोष किस बात का फैला है?

अ. सरकार से असंतुष्ट हैं

आ. लोगों में जलन के कारण असंतोष है

इ. पैसा कम होने के कारण

ई. सुख-सुविधाओं के अभाव के कारण

Worksheet.

१. सुधाकर अपनी डायरी औरों को क्यों नहीं दिखाता था?

२. चोरों को सुधाकर के यहाँ कुछ क्यों नहीं मिला?

३. “पीठ थपथपाकर रीढ़हीन बनाना” इससे आप क्या समझते हैं?

४. आपके अनुसार पेड़ों ने हम मानवों को स्वार्थी क्यों खा होगा?

५. धर्म,जाति और नस्ल हमारे समाज को बांटते हैं | क्या इस विधान से आप सहमत हैं? उदाहरण द्वारा स्पष्ट करें |

६. “आज कल व्यक्ति को समाधान नहीं सत्ता चाहिए ” पाठ के आधार पर स्पष्ट करें|

७. लोगों में जलन बढने के क्या-क्या कारण हो सकते हैं?

८. भाषा लोगों को चेतावनी क्यों देगी?

९. पाठ में वर्णित दुर्गन्ध फैलने के क्या-क्या कारण हो सकते हैं?

१०. यह दुर्गन्ध कहाँ से आ रही है?

११. पाठ पढने के बाद क्या आपको वाकई लगता है कि सुधाकर “हिला हुआ आदमी” है?

१२. आपके अनुसार “हिला हुआ” यह पद पाठ में किस अर्थ से आया होगा?

परियोजना.

१० हिले हुए व्यक्तियों के
महात्मा फुले और सावित्री बाई
अब्राहम लिंकन
कार्व्हर
राजा राम मोहन राय

एमिलिया फ्रंक्स
मलाला
सोरोजिनी नायडू
रविन्द्रनाथ